अथ यन्तारमादिश्य धुर्यान्विश्रामयेति सः ।

तामवारोहयत्पत्नीं रथादवतार च ।।54।।

अन्वय अथ सः यन्तारं 'धुर्यान् विश्रामय' इति आदिश्य तां पत्नीं रथात् अवारोहयत् अवततार च।

अनुवाद आश्रम में पहुँचकर राजा सारथि को 'घोड़ों की थकान दूर करो' ऐसा आदेश देकर रथ से पहले आप उतरे, तदनतर अपनी पत्नी सुदक्षिणा को उतारा।

टिप्पणियाँ

यन्तारं सारथि, रथ चलाने वाला (हाँकने) वाला, धातु यम् तृच्, द्वितीया विभक्ति एकवचन।

आदिश्य आ उपसर्ग धातु दिश् ल्यप्, आदेश देकर।

धुर्यान् धुरं वहन्ति इति धुङ्र्याः, धुर् यत्। बोझ उठाने वाला पशु, यहाँ अर्थ है रथ से जुते हुए घोड़ों को।

अवारोहयत् अव उपसर्ग धातु रुह् णिच्। लङ्, अन्य पुरुष, एकवचन। उतरने में सहायता की।

विश्रामय वि उपसर्ग धातु श्रम् णिच् लोट्, मध्यमपुरुष, एकवचन। तुम घोड़ो को आराम कराओ, उनकी थकान हटाओ।

अवततार अव उपसर्ग धातु तृ, लिट्, अन्य पुरुष, एकवचन। उतरा।